

महाभारत में प्रतिबिम्बित पितामह भीष्म के राजनैतिक दूरदर्शिता

श्रीरञ्जन माहात, सहायक अध्यापक, संस्कृत विभाग

के. के. मुकुन्दराम महाविद्यालय

Mail ID : going2ranjan@gmail.com

डॉ. परिमल मण्डल, सहायक अध्यापक, संस्कृत विभाग

स्वर्णमयी योगेन्द्रनाथ महाविद्यालय

Mail ID: Parimalbhu@gmail.com

लौकिक संस्कृत साहित्य में वाल्मिकी प्रणीत रामायण के पश्चात् व्यासदेव प्रणीत महाभारत का बहुत महत्वपूर्ण स्थान है। इसका आकार, उच्चता, गुरूता, अखण्ड समग्रता असधारण होने के कारण महान ग्रन्थ महाभारत नाम से प्रसिद्ध है - महत्वाद् भारवत्त्वाच्च महाभारतमुच्यते। इसके भीतर भरतवंशी क्षत्रियों राजाओं जन्म वृत्तान्त के इतिहास समाहित होने के कारण भी इसका नाम महाभारत है- 'भरतानां महज्जन्म महाभारतमुच्यते'। इसमें मानवता की विजय का इतिहास है, इसलिए यह जय है।

भारतीय संस्कृति की परम्परा में यह पञ्चम वेद है। डॉ कपिलदेव द्विवेदी ने महाभारत के महत्व का सुन्दर विवेचन किया है -महाभारत एक नहीं अनेक दृष्टियों से अत्यन्त महत्वपूर्ण है। इसमें स्मृतिशास्त्र ,दर्शनशास्त्र समाजशास्त्र , राजनीतिशास्त्र, धर्मशास्त्र आदि ज्ञान-विज्ञान का बहुत बड़ा विश्व-कोश है। यह काव्य आकार तथा गम्भीरता के दृष्टि से यह काव्य विश्व के साहित्य में

सर्वाधिक विशाल रचना है। यह एकलाख श्लोकों वाला और 18 पर्वों में विभक्त एक नैतिक ग्रन्थ है।

पितामह भीष्म महाभारत के प्रमुख पात्रों में से एक हैं। ये राजा शान्तनु और गङ्गा का पुत्र था। इनका वास्तविक नाम देवव्रत था। ये आठ वसुओं में एक थे। अपने पिता को दिये गए वचन के अनुसार इन्होंने आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत का पालन किया था। इन्हें इच्छामृत्यु का वरदान प्राप्त था। पितामह भीष्म का महाभारत में व्यक्तित्व अनेक रूप दृष्टिगोचर होता है। महामुनि व्यास के अनुसार राजा को सदा पुरुषार्थ के लिये उद्यत रहना चाहिये। सामान्यतया कार्यसिद्धि के दो कारण माने गये हैं। -प्रारब्ध और पुरुषार्थ। इनमें पुरुषार्थ को ही मानना चाहिये। यदि प्रारम्भ किया हुआ कार्य पूर्ण न हो तो इसके लिये दुःखी नहीं होना चाहिये। सदा कर्मशील रहना चाहिये। यही राजाओं की सर्वोत्तम नीति है -

विपन्ने च समारम्भे सन्तापं मा स्म वै कृथाः।

घटस्यैव सदाऽऽत्मानं राज्ञामेष परो नयः॥

वाल्मीकि रामायण के अनुसार नीति और विनय, दण्ड एवं अनुग्रह के अनुसार उपयोग ही राजनीति है। आचार्य मनु के अनुसार जो राजा भविष्यकाल के कार्यों के गुण, - दोषों को जानने वाला, वर्तमान कालके कार्यों के विषय में शीघ्र निश्चय करने वाला और बीते हुए एवं कार्यशेष का ज्ञाता हो। उस राजा को ऐसी रीति से कार्य करना चाहिये। जिससे शत्रू, मित्र और

उदासीन राजा उसे पराजित नहीं कर पायें यह मनुसंहिताका सप्तम अध्याय पर वर्णित है।ⁱⁱ

शिशुपालवध महाकाव्य में राजनीति को परिभाषित करते हुए बलराम कहते हैं- अपनी उन्नति होना चाहिये तथा शत्रु की वृद्धि होने पर युद्ध करना चाहिये यही राजनीति है।ⁱⁱⁱ

कौटिल्य के अनुसार यही नीति है कि राजा स्वगुणों का विकास करे तथा शस्त्रों से जीविकोपार्जन करके प्रजा की रक्षा करे-

क्षत्रियस्याध्ययनं यजनंदानं शस्त्राजीवो भूतरक्षणं च।^{iv}

महाभारत राजनीतिक दृष्टि से एक महत्वपूर्ण ग्रन्थ है। इसमें भीष्म का चरित्र एक महान राजनीतिक द्रष्टा के रूप में उजागर हुआ है। उन्होंने युधिष्ठिर को अपना राजनीति सम्बन्धी विचारों से अवगत कराते हुये अपना राजनीतिक दृष्टिकोण प्रकट किया है। जो निम्नलिखित विवरण से स्पष्ट होगा-

भीष्म ने राजा की महत्त्व एवं उसकी आवश्यकता पर बड़ा बल दिया है। संसार में धर्म की स्थिति राजा के अधीन है। प्रजा राजा के भय से ही परस्पर एक दूसरे को मारती नहीं है।

राजमूलो महाप्राज्ञो धर्मो लोकस्य लक्ष्यते।

प्रजा राजभयादेव न खादन्ति परस्परम्।।^v

जैसे सूर्य अथवा चन्द्रमा के उदय न होने पर सभी प्राणी अन्धकार में विलीन हो जाते हैं और परस्पर एक दूसरे को देख भी नहीं सकते, उसी प्रकार अल्प

जलसे युक्त तालाब में मछली और हिंसक के भयसे रहित स्थान में पक्षी एक दूसरे का नाश करते हुये निर्विघ्न विचरण करते हैं और परस्पर बलपूर्वक एक दूसरे पर आक्रमण करके सर्वनाश की स्थिति प्राप्त करते हैं। इसी प्रकार राजा के नष्ट हो जाने पर प्रजाभी उसी प्रकार नष्ट हो जाती है। जैसे ग्वालों से रहित पशु गहरे अन्धकार में इधर उधर भटककर नष्ट हो जाते हैं।^{vi}

जिस राज्य में राजा नहीं होता है वहां अराजकता फैल जाती है। जिस प्रकार रथ ध्वजा के द्वारा पहचाना जाता है, धूम से अग्नि का बोध होता है उसी प्रकार प्रजा का परिचय राजा के द्वारा होता है।^{vii} इस प्रकार हम कह सकते हैं कि राजा का अस्तित्व प्रजाको व्यवस्थित एवं संरक्षित रखने के लिये अत्यावश्यक है।

1. राजा और उसके गुण-

महाभारत के शान्तिपर्व में राजा के उत्पत्ति के सम्बन्ध में भीष्म पितामह कहते हैं कि सत्ययुग में राजा एवं राज्य की उत्पत्ति हुई। समस्त प्रजाओं का रंजन करने के कारण वे राजा कहलाते थे। राजा की आवश्यकता का प्रतिपादन करते हुए भीष्म पितामह कहते हैं कि राजा व्यतीत राष्ट्र निर्बल होता है। जिन देशों में राजा का अभाव रहता है वहाँ धर्म के स्थिति नहीं रहती, अतः वहाँ लोगों में एक दुसरे हड़पने के प्रवृत्ति में लगे हुए रहते हैं। इसलिये प्राचीनकाल में अराजकता की स्थिति उत्पन्न होने पर राजा की उत्पत्ति हुई।

राजा के गुणों के विषय में मनु, याज्ञवल्क्य, शुक्र आदि सभी राजशास्त्रीयों ने अपना अपना मत विस्तारपूर्वक अपने अपने ग्रन्थ में प्रस्तुत किया है।

तदनुसार राजा को सामर्थ्य, उत्साह, धीरता, कृतज्ञता, सत्यवादिता, विनम्रता, धार्मिकता आदि गुणों से सम्पन्न होना चाहिये। उसमें अनेक सद् गुणों का समावेश आवश्यक है। महाभारत में पितामह भीष्म कहते हैं कि उत्कर्ष चाहनेवाले राजा में 36 गुण अवश्य रहना चाहिये^{viii}। वह कहते हैं राजा को सदैव सत्य का आश्रय लेना चाहिये। क्योंकि सत्य परायण राजा इहलोक और परलोक में सुख की प्राप्ति करता है। राजाओं के गुणों का वर्णन करते हुए कहा गया है कि राजा को गुणवान, शीलवान, आत्मसंयमी, जितेन्द्रिय, प्रसन्नस्वभाव वाला, और दान करने वाला होना चाहिये। इससे उसके समीप हमेशा राजलक्ष्मी का वास रहता है।^{ix}

राजा को कैसा स्वभाव अपनाना चाहिये यह समझाते हुये भीष्म कहते हैं राजा यदि मृदु स्वभाव का होता है तो प्रजा का यथोचित मान नहीं करती और यदि बहुत ही तीक्ष्ण स्वभावी होता है तो संतुष्ट रहती है इसीलिये राजा को मध्यम मार्ग का आश्रय लेना चाहिये। अर्थात् उसे वसन्त के सूर्य के समान यथोचित मृदुता व कठोरता का अवलम्बन लेना चाहिये।^x

भीष्म के मतानुसार जब राजा राजपद के योग्य आचरण सम्बन्धी विशेष गुणों की प्राप्ति कर लेता है तब उसको लोकरञ्जन के कार्य में संलग्न हो जाना चाहिये। वास्तव में लोकरञ्जन के कार्य मात्र का सम्पादन राजा का सनातन धर्म माना गया है।^{xi}

जिस प्रकार गर्भवती स्त्री अपने मन को अच्छे लगने वाले प्रिय भोजनादि का भी परित्याग करके गर्भस्थ बालक के कल्याण का ध्यान रखती है, उसी

प्रकार धर्मात्मा राजा को भी सर्वदा अपने हितकारी कार्यों का परित्याग करके लोकलज्जन कार्य में निरन्तर संलग्न रहना चाहिए।^{xii}

भीष्म के अनुसार योग्य शासक वह व्यक्ति है जो ज्ञान एवं ज्ञानियों का सत्कार करने वाला है। जिसने शास्त्रों का निश्चयात्मक ज्ञान प्राप्त करता है, जो परहित कल्याण में संलग्न रहता है, जो सत्पुरुषों द्वारा प्रशस्त मार्ग पर चलने वाला, स्वार्थत्यागी, आत्मसंयमी तथा क्रोध पर विजय पाने वाला है वह ही राजा राज्य चलाने के योग्य समझा जाता है।^{xiii} जिसके गुप्तचर, गुप्तविचार निश्चय किये हुए करने योग्य कर्म और जिसके किये हुए कर्म शत्रुओं द्वारा कभी कभी जाने न जा सके वही राजा राज्य पाने का अधिकारी है।^{xiv} भीष्म बताते हैं कि जो राजा सभी राज्य पर दीर्घ काल तक शासन करना चाहता है उसके लिये प्रजा की भलीभाँति रक्षा को छोड़ कर अन्य कइ सनातन धर्म नहीं है।^{xv}

2. दण्डव्यवस्था अथवा न्यायव्यवस्था-

न्याय का मानव जीवन में बहुत महत्व है। यह न्याय संसार के अन्य व्यक्ति के दुर्व्यवहार से वचाने हेतु अत्यन्त आवश्यक है। किसी भी प्रशासन का अपराधियों को पकड़ने उन्हो दण्ड देने की व्यवस्था अत्यन्त आवश्यक है। महाभारत काल में न्याय वितरण का सर्वोच्च सिद्धान्त यह था कि निर्दोष व्यक्तियों को दण्ड नहीं मिलना चाहिये। भीष्म पितामह दण्डव्यवस्था के उपदेश देते हुए कहते हैं कि अपराधियों को दण्ड देने में सङ्कोच नहीं करना चाहिये और उसे सदा धैर्य रखना चाहिये, उस धीर एवं दृढ़ प्रतिज्ञ मनुष्य को किसी

तरह भय नहीं होना चाहिये।^{xvi} भीष्म सम्पूर्ण राज्य को न्यायव्यस्था के आधार पर चलाने कि लिए राज्य को सप्ताङ्ग राज्य के नाम से सम्बोधित करते है। इस प्रकार वह राज्य को ऐसा अवयवी मानते है जिसके साथ अवयव अथवा अङ्ग होते है। यह सात अङ्ग है - राजा, अमात्य, कोष, दण्ड, मित्र, जनपद, और पुर है।^{xvii} कौटिल्य का अर्थशास्त्रमे भी यह धारणा मिलते हैं। मनुसंहितामे भी सप्ताङ्ग का उल्लेख मिलती है।^{xviii}

3. राजकर्तव्य-

भीष्म का मत है की राजा का कर्तव्य है की वह सदैव अपने कोषागार मे वृद्धि का प्रयत्न करता रहे, उसे न्याय करने में यमराज ओर धनसंग्रह करने में कुवेर के समान होना चाहिये। वह स्थान वृद्धि तथा क्षय के हेतुभूत् दास वर्गों का सदा ज्ञान रखे। जिनका भरण पोषण राजा स्वयं करे। राजा को सदा प्रसन्न मुख रहना ओर मुस्कुराते दुसरो के द्वारा अपने सेवको मे भी गुटवंदी न होने देना स्वयं ही अपने नगर का निरीक्षण करना, स्वयं किसी पर भी पुरे विश्वास न करना, दुसरो को आश्वासन देना, नीतिधर्म का अनुसरण करना। सदा ही उद्योगशील बने रहना। शत्रूओ की ओर से सावधान रहना - ये सभी राज्य की रक्षा के साधन है।

राजा यदि प्रजा की रक्षा नहीं करता है तो राज्य मे अधर्म उपस्थित हो जाता है। राजा को अपनी प्रजा की शत्रू ओर दस्युओं से तो रक्षा करनी ही चाहिए। कभी कभी ऐसा भी होता था कि राज्य मे कुछ ऐसे जनसमुदायों से भी प्रजा की रक्षा करनी पड़ती थी। जो कि प्रजा द्वारा अनुचित रूप मे संगठित किये

जाते थे। ओर जिनका उद्देश्य राजा का विरोध करना होता था। इस विषय में भीष्म राजा युधिष्ठिर को इस प्रकार आदेश देते हैं पुर की रक्षा भृत्यों के विश्वास पर ही निर्भर न रहना। पुरवासियों के अनुचित संघ का भेदन, शत्रु, मित्र, ओर उदासीनों की जाँच करना राजा का कर्तव्य है।

4. राजाओं के महत्त्व-

भीष्म राजाओं के लिये कर्म के महत्त्व पर प्रकाश डालते हुये कहते हैं - उद्योग ही राजधर्म का मूल है। देवराज इन्द्र ने उद्योग से ही अमृत प्राप्त किया, तथा उद्योग से ही देवलोक पर इहलोक में श्रेष्ठता प्राप्त की।^{xix} जो उद्योग में वीर है वह पुरुष वाग्वीर पुरुषों पर अपना आधिपत्य जमा लेता है।^{xx} शुक्रनीति में भी कर्म का महत्त्व बताते हुए कहा गया है कि इस संसार में जीव क्षणभर भी कर्मशील हुए बिना निवास नहीं कर सकता। कर्म से ही सुख और दुःख प्राप्त होते हैं-

कर्मैव कारणं चात्र सुगतिं दुर्गतिं प्रति।

कर्मैव प्राक्तनमपि क्षणं किं कोऽस्ति चाक्रियः॥ 1.29

भीष्म के मतानुसार बलवान् राजा को कभी दुर्बल शत्रु की भी अवहेला नहीं करनी चाहिए। अर्थात् छोटा समझकर उसकी ओरसे लापहरवाही न दिखाये, क्योंकि आग थोड़ी सी हो तो भी जला डालती है और विष कम मात्रा में हो तो भी मार डालता है-

न च शत्रूरवज्ञेयो दुर्बलोऽपि बलीयसा।

अल्पोऽपि हि दहत्यग्निर्विषमल्पं हिनस्ति^{xxi}।

शिशुपालबध महाकाव्य में भी इस धारणा प्रतिफलित है।

5. गुप्तचर व्यवस्था-

भीष्म की धारणा है राजा अपने गोपनीय रहस्य, शत्रूयों पर विजय पाने के लिये एकत्रित किए गये जनसमुदाय को, विजय के ही उद्देश्य से उसके हृदय में जो कार्य छिपा हो, अथवा उसे जो न करना योग्य असत्कार्य करना हो, वह सब कुछ सरलभाव से ही छिपाये रखना चाहिये। मनुसंहितामें भी ऐसी धारणा प्रकटित है।^{xxii}

भीष्म गुप्तचर व्यवस्था पर प्रकाश डालते हुए कहते हैं कि- गुप्तचर राज्य की रक्षा तथा सुव्यवस्था को परिचालित करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। अतः राजा को ऐसे व्यक्ति गुप्तचर रखने चाहिये जिन लोगों की अच्छी तरह परीक्षा कर ली गयी हो, जो बुद्धिमान् होने पर भी देखने में गुंगे, अंधे और बहर से जान पड़ते हों तथा जो भुख प्यास और थकान सहने की शक्ति रखते हों। ऐसे विद्वान् पुरुषों को गुप्तचर नियुक्त करना चाहिये।

प्रणिधीश्च ततः कुर्याज्जडान्धबधिराकृतीन्।

पुंसः परीक्षितान् प्राज्ञान् क्षुत्पिपासाश्रमक्षमान्^{xxiii}॥

6. शांति एवं सुव्यवस्था-

राज्य में शांति एवं सुव्यवस्था को चिरस्थायी रखने के लिए मनुष्य के मध्य न्याय का व्यवहार होना परम आवश्यक है। न्याय के सम पक्षपात नहीं करना

चाहिये। मनुसंहिता में भी और अर्थशास्त्र में भी यथार्हदण्डः पूज्यते इति कहा गया है। आधुनिक प्रसङ्ग येमन काश्मीर ।

7. मन्त्रिमण्डल -

जो वेदविद्या के विद्वान् स्नातक, बाहर भीतर से शुद्ध एवं निर्भीक हों ऐसे चार ब्राह्मण, शरीर से बलवान तथा शस्त्रविद्या को जानने वाले आठ क्षत्रिय, धन धान्य से सम्पन्न इक्कीस वैश्य, विनय शील तथा पवित्र आचार विचार वाले तीन शूद्र, आठ गुणों से युक्त और पुराण विद्या को जानने वाला एक सूत जाति का मनुष्य - इन सब लोगों का एक मन्त्रिमण्डल बनाये^{xxiv}। अर्थशास्त्र में भी कहा गया है कि मन्त्रिपरिसर में राजा अपने सामर्थ्य के अनुसार अमात्यों की नियुक्ति करें। अतः कहते हैं कि- यथासामर्थ्यमिति कौटिल्यः इति।

8. दुर्ग-

भीष्म के मतानुसार राजा को छ प्रकार दुर्गों का आश्रयलेकर नये नगर बसाने चाहिए। मनुसंहिता में भी धन्वादि दुर्ग का यथार्थ वर्णन प्राप्त होता है।

9. कर व्यवस्था-

कर व्यवस्था के बारे में बताते हुए भीष्म कहते हैं कि राजा को माल की खरीद-बिक्री, रास्ते की दूरी, उसके मँगाने का खर्च और उसकी लागत तथा बचत का विचार करके ही व्यापारियों पर टैक्स लगाना चाहिये। राजा को प्रजा की आय का छटा भाग उसकी रक्षा के लिए ही कर रूप में लेना चाहिये-

आददीत बलिं चापि प्रजाभ्यः कुरुनन्दनः

स षड्भागमपि प्राज्ञस्तासामेवाभिगुप्तये^{xxv}॥

कालिदास की अभिज्ञान- शकुन्तला नाटक पर भी कालिदास ने ऐसी बात को प्रतिष्ठित करें-

तपःषड्भागमक्षय्यं ददात्यारण्यकाः हि नः॥

वास्तव में भीष्म पितामह महाभारत के महत्वपूर्ण पात्रों में से एक है। वे एक श्रेष्ठ राजनैतिक पुरुष के रूप में महाभारत में प्रदर्शित हुए हैं। गीता में कहा भी गया है- यद्यदाचरति श्रेष्ठस्तत्तदेवेतरो जनः। स यत्प्रमाणं कुरुते लोकस्तदनुवर्तते^{xxvi}॥ अर्थात् श्रेष्ठ पुरुष जैसा आचरण करते हैं, अन्य जन भी वैसा ही अनुकरण करते हैं। भीष्म पितामह के राजनैतिक दूरदर्शिता वर्तमान समाज के लिए उदाहरणस्वरूप है। आधुनिक समाज के मनुष्य महाभारत से प्रेरणा लेकर राजनैतिक विचार सहित अन्य विचारों को भी प्रेरणा लेकर अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में सहायक सिद्ध हो सकती है।

सन्दर्भ-

ⁱ महाभारत, शान्तिपर्व 56.16

ⁱⁱ मनुस्मृति. 7.179-180

ⁱⁱⁱ शिशुपालवध- 2.30

^{iv} अर्थशास्त्र 1.3.5

^v महाभारत, शान्तिपर्व- 68.8

^{vi} महाभारत, शान्तिपर्व 68.10.11,13

^{vii} रामायण- 2.6.30

viii	महाभारत शान्तिपर्व	70/8-11
ix	महाभारत, शान्तिपर्व	56.19
x	महाभारत, शान्तिपर्व	56.21
xi	महाभारत, शान्तिपर्व	57.11
xii	महाभारत, शान्तिपर्व-	56.45-46
xiii	महाभारत, शान्तिपर्व-	57.38
xiv	महाभारत, शान्तिपर्व-	57.39
xv	महाभारत, शान्तिपर्व-	57.42
xvi	महाभारत, शान्तिपर्व-	56.47
xvii	महाभारत, शान्तिपर्व-	69.64-65
xviii	मनुस्मृति-	9.294
xix	महाभारत, शान्तिपर्व-	58.14
xx	महाभारत, शान्तिपर्व-	58.15
xxi	महाभारत, शान्तिपर्व-	58.17
xxii	मनुस्मृति.	7.105
xxiii	महाभारत, शान्तिपर्व.	69.8
xxiv	महाभारत, शान्तिपर्व-	85.7-9
xxv	महाभारत, शान्तिपर्व-	69.25
xxvi	भगवद्गीता	3/21

सहायक ग्रन्थावली:-

1. द्विवेदी, कपिलदेव. वैदिक साहित्य एवं संस्कृति. वाराणसी: विश्वविद्यालय प्रकाशन, 2010. (मूद्रित).
2. बन्द्योपाध्याय, धीरेन्द्रनाथ. संस्कृत साहित्ये इतिहास. कलिकाता: प. ब. रा. पु. प, 2005. (मूद्रित).

-
3. भट्टाचार्य, सुखमय. महाभारतेर चरितावली. कलिकाता: आनन्द, 2014.(मूद्रित).
 4. भट्टाचार्य, सुखमय. महाभारतेर समाज. शान्तिनिकेतन: विश्वभारती, 1983.(मूद्रित).
 5. भादुड़ी, नृसिंहप्रसाद. महाभारतेर दण्डनीति. कलिकाता: आनन्द,
 6. कौटिल्य. अर्थशास्त्रम्. सम्पा. राधागोविन्द वसाक. कलिकाता: संस्कृत बुक डिपो, 2015. मूद्रित.
 7. मनु. मनुसंहिता. सम्पा. मानवेन्दु बन्धोपाध्याय. कलिकाता: संस्कृत पुस्तक भाण्डार, 2012. मूद्रित.